विविधा

रायपुर, गुरुवार १७ अक्टूबर १९९१

छत्तीसगढ़ में संगीत के क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी नहीं है इसके बावजूद सांगीतिक गतिविधियों की शून्यता का कारण हमारी समझ से बाहर है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए 'महाराष्ट्र मंडल' रायपुर ने 'स्वर-संध्या' शीर्षक से एक श्रृंखला की शुरूआत की है। इस श्रृंखला का उद्देश्य ऐसे कलाकारों को मंच पर लाना है जो साधनारत हैं लेकिन लोग उनकी प्रतिभा से नावाकिफ हैं।

'स्वर-संध्या' में अब तक वरिष्ठ संगीतज्ञ **श्री दिगम्बर केलकर** (रायपुर), **मधुकर पाठक** (जबलपुर) एवं **साधना राहटगांवकर** (महासमुंद) शिरकत कर चुके हैं। इन तीनों आयोजकों की अपनी गुणवत्ता थी।

'स्वर-संध्या' की श्रृंखला को जारी रखते हुए इस बार भिलाई के प्रतिभावान स्तरीय ग़ज़ल गायक **अश्वनी वर्मा** की ग़ज़लों का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस आयोजन के बारे में यह कहना कि "नगर में आज तक हुए श्रेष्ठ व यादगार सांगीतिक आयोजनों में यह आयोजन गिना जायेगा" गलत न होगा।

शास्त्रीय संगीत पर आधारित अश्वनी वर्मा की गायकी की अपनी एक विशिष्ट शैली है। देर तक स्वर पर ठहराव, स्वरों का शुद्ध लगाव, एक ही ढर्रे पर चली आ रही गायकी से हटकर एक विशेष अंदाज, गंभीरता व गहराई अश्वनी वर्मा की

अश्वनी वर्मा

ज़िंदगी की हकीकत बयाँ करती हैं मेरी ग़ज़लें- अश्वनी वर्मा

गायकी की विशेषता है।

उनकी गायकी की एक और सिफ्त यह है कि आजकल लोकप्रियता बटोरने के लिए जिस तरह हल्की ग़ज़लों को गाया जाने लगा है या यूं कहा जाय कि निम्न स्तरीय शेरो-शायरी का इस्तेमाल किया जा रहा है, उससे उनकी गायकी भिन्न है। उनका ग़ज़लों का चयन काबिले-तारीफ है, इस संबंध में जब मैंने सवाल किया तो वे बोले- "ऐसी ग़ज़लें मेरी अज़ीज़ हैं जिनमें जिंदगी की हकीकत बयां होती है।" अश्वनी खुद के द्वारा संगीतबद्ध ग़ज़लें ही गाते हैं।

अश्वनी वर्मा के खानदान में पिछली दो पीढ़ियों से संगीत चला आ रहा है। उनके दादा अपने समय के श्रेष्ठ गायकों में गिने जाते थे। पिता श्री रतनचंद्र वर्मा भी गायकी में अपनी अलग पहचान रखते थे। यानी यूं कहा जाय कि गायकी उनके खून में है। अपने पिता से ही अश्वनी ने तालीम पाई। "शाम होते ही जब आस-पड़ोस के बच्चे खेलने-कूदने घर से बाहर निकल जाते थे तब मैं पिताजी के सामने बैठकर सुर साधा करता था"- बताते हैं अश्वनी वर्मा। वर्षों के कठिन रियाज का ही नतीजा है कि आज उनकी आवाज पकी हुई, गंभीरता व गहराई लिए हुए है।

अश्वनी की इस ग़ज़ल को श्रेताओं ने बहुत पसन्द किया-

बदगुमां मुझसे ना ए फसले बहारा होना
मेरी आदत है फिज़ा में भी गुलअफसा होना
उनकी और खूबसूरत प्रस्तुतियां थीं-

चार दिन मोहब्बत में साथ निभाने वालों
उम्र भर साथ निभाओ तो कोई बात बने
कभी खुशी भी मिली तो आँख भर आई
हमारा दिल भी बड़ा ग़मशनास लगता है
बहुत अंधेरों से हमने फरेब खाये हैं
कि रौशनी में भी खौफ़ो - हिरास लगता है.
एक और बानगी देखिये -
अजब है उनमे भी कुछ दर्द के फसाने का
बदलता जाता है अंदाज मुस्कुराने का

अश्वनी की सभी ग़ज़लों को श्रोताओं ने दाद से नवाज़ा।

इस कार्यक्रम की एक खास बात यह भी है कि नगर के संगीतकार **श्री मदन चौहान** का एक लंबे अरसे के बाद तबला संगति सुनने मिली। मदन चौहान के परिचय की आवश्यकता मैं महसूस नहीं करता, एक लंबे अरसे से वे गायन-वादन के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाए हुए हैं। महेंद्र चौहान ने भी तबले पर अनुकूल संगति की, उनसे 'संगीत-जगत' को बहुत सी उम्मीदें हैं।

'स्वर-संध्या' एक स्तरीय और प्रभावपूर्ण श्रृंखला है। श्रोताओं की भरपूर उपस्थिति और कार्यक्रम के समापन पर खुशहाल प्रेक्षागृह के बाहर निकलना इस भ्रांति को तोड़ता है कि "सांगीतिक कार्यक्रमों में दर्शकों की उपस्थिति न्यून होती है।" अच्छे कार्यक्रम हो तो दर्शकों की उपस्थिति भी अच्छी होती है।

एक बात जो बहुत खटकी वह यह है कि पूरे कार्यक्रम के दौरान महाराष्ट्र मंडल की 'कार्यकारिणी' में से एक भी सदस्य उपस्थित नहीं था। अपनी ही संस्था के कार्यक्रम के प्रति उदासीनता...? फिर भी 'स्वर-संध्या' का यह चौथा यह आयोजन सराहनीय था, जिसके लिए संयोजक **राजेश गनोदवाले** बधाई के पात्र हैं।

□ **मंगेश मोड़क**